

शिष्यापंथिं प्रथयेत् ॥ कारुण्यनिनये देवि सर्वसन्निधि संश्रये ॥ शारदा
 वत्सलोपासनायामस्मिन्निशितो कुरु ॥ १ ॥ पुं देवते तु ॥ कारुण्यश्रय
 दत्तं सर्वदा ॥ २ ॥ अमुकदेवतामंत्रमहं ददामीति दद्यात् ॥ दीक्षणाकर्तृ
 श्रावणं त्रैलोक्ये वाच्यते ॥ ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्मृत
 नापि कुरुते ॥ तस्मै वंद्ये मं वास्तु सुप्रसीद भव सर्वदा ॥ १ ॥

आशा कारुण्य

2637

ASIA ARCHIVES

ॐ

कबंध॥भदिनीवकीति॥वाकपूजा॥वसुधनावति॥पंचोप॥ ॥ॐतिवसु
धनाधिवासन॥ ॥तत्तकलगाधिवासन॥मंडलमधसपीतगोसुवने
सुदलगापाडाधनकीदधसकलगतम॥कडाभसुउकडासवऊ
लिडानगीवतडासदी०।धननीलनंगभ्रुगुक्रनंगनेअधुपीत०।व
मूयनक००ीमनममनंग॥ ॥धनगीतनिर्माभंवडे॥सूत्रपत्रय॥मंडल
रुमधनिर्गत्यपूर्वहिप्वा०मंडलाधिपतिपागवानुशदिनऊसानिदि
तासदलकऊलकर्मिकायांविऊयकलर्गसार्वकर्तिककलर्गवास्थापय
रुस्थापनि॥ ॥धनऊपा॥गीतसंतव॥ध्यान॥उंभ्राःहंसफऊप्रहृति॥
मधुनिमताभ्रापापुपंचोलाघंसुति॥ ॥पुनगमथा॥पंपूलाघंसु

निर्माभंव
नंगमधिवा

ॐ

वाकपूजा॥भुकात्राप्रवति॥वसि॥ ॥ॐतिकलगाधिवासनः॥ ॥तत्ता
सूजाधिवासनविधिः॥ ॥वजनधिय॥वाकंउंऊंऊंहीनत्रा०००दि॥
सुसमंत्रेणभुकात्यादि॥सूउंभ्रामस्य॥ऊपायः॥पंचवडहावना॥भरहाव
ना॥०००हावना॥ ॥नीगमधिवासन॥पंलांघंसु॥दडाभयादनी
गसवऊनधिय॥उंई०००ति॥नीलनंगस्यबीजधन॥भ्रुगुक्रनंग॥वऊ
नधिय॥प्रवंनैमयवायुय००ीमनेमधनी॥ ॥वाकपूजा॥पंलाघंसुति॥
॥ॐतिनंगमधिवासनविधिः॥ ॥ऊमापनविसर्जननंगविलासय॥ ॥तत्ता
सूजाधिवासनविधिः॥ ॥पूर्ववहूपग्रंतिरवस्थापनं॥हावना॥ऊमापन॥
दडापापनिक्रमहाडाभ॥नेर्कृष्णडा००ीमनडासूउनिद्रसंनिल॥ ॥धन

नय
नय

वऊधनप
वऊ

सुत्रपातन

सूत्रथययाविधन क्राय ॥ लावना ॥ बक्रसंगंधसबलाडासूत्रथयमंश ॥
ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ हवेदक्रिसाडा-उक्रनडा-ॐ नमः डा-नेमूयडा-नेमूयडा-
वायव्यडा ॥ ॥ धनवक्रुलकाय ॥ गक्र ॥ ॐ नमः विरुवक्रुति ॥ वेनाबनादीनपंश
पदानयूजा-सा-यं-क्रुति ॥ ॥ ॐ नमः सुत्रपातविधि ॥ ॥ तनादवगाधिवान
विधिः ॥ ॥ शुभशुभसुनसुविष्काय ॥ लावना ॥ तनामंडलसमध्यनिषय-पश्रिमा
स-सर्वाधिपति-मांडलसमस्यानानि-दवताम्यासक्रम-सपंशयुनसुगंधैर्वक्रु
समीकृतं कृत्वा-कृष्णमंडलस-सहवीजमयूषां कृतं व-कलम्भदिदवतामंजुली
यथयोगम-कृष्णम-वैडम-सूर्यम-प्रवेण ॥ ॥ धनराशिनस्तानकाय ॥ ॥
तना-श्री-पा-प-उदमनस-पयित्वा-वक्रसंवनयापूष्य-मास ॥ मंडल ॥ ॐ नमः

समंनय
वक्रगाय

दवता ॥
मंडलकाय नक्रपातन

ॐ कामधियायवाक ॥ श्री-पा-प-पंश-सा-यं-क्रु ॥ पूर्ववक्त्रकपूजा ॥ सु-थ-
म-र-ह-साहिः ॥ ॥ ॐ नमः दिवगाधिवानविधिः ॥ ॥ धननारिकीलपूजा ॥ तानमंडल
ध्यानं ॥ ॥ धयालिका-नारिकीलसिनाडा-धयालस-पंशगंध-पाप
लीतय ॥ धनपंशपातनपूजा ॥ यं-चा-क्रु ॥ ॥ गाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ तनस्थि
ला-वक्रांकसम्यकनावाभवक्रुमशिरा-मंडलः ॥ नंगनपातयत ॥ मंडलपठन-मू
लसूत्रांतनलिविदुप्रविग्ध-निष्कुमदाति ॥ ॥ तनालिवितमंडलसर्वा
कानसूटीरुत ॥ नक्रांतम्यानि-विक्रनस्याययदिति ॥ ॥ ॐ नमः नक्र
पातनविधि ॥ ॥ दवपूजा-कूसूनयाप ॥ ॥ धयालिकाधर्मदनक ॥ शु
भमंडल-सकपालपूजा-लांडलाठक-पुनवीनपूजा ॥ महावसिष्ठिप ॥

अभिवादन

पनिवानमूजा॥दगुवसिविद्यागीतउंआरुहृ॥स्वांकितन।प्रयभूजा॥
कमापन-कलभाहिषकादि॥आभीर्वीद-सम्बत-शायूसकायसुमय-वि
सर्जन-कलभादिद्राया-धनादिभूय॥द्वयधतसेविकाक॥मंडलरु
निदात॥गलवकु-धूमंगमनिपूजा॥तांबूलदानवाकआभीर्वीद॥॥
श्रुतिविद्यकीरुतक्रियाविधिसमाफा॥॥॥॥उंनमःश्रीवज्रसत्त्वाय॥
अथ-अधिवासतविधिः॥॥तत्रभिष्मकंदोषा-वहनूवा-कृतमीडान्
॥ज्ञानराधिया-मानाप्य-पृष्ठांजलिं कृत्वा वदन्॥दशनावधय॥शिको
यतथागतकामउयसीपदपाप्रय॥धतविततियादी॥॥मंडलप्रव
कार्यः॥अथननिगाऊतमाम॥॥मृगुक्तमज्ञानकुमकनति॥॥

वृद्धधर्मसंघद्विषयान्नगुण्यति०॥ ॥ गुरुवराव०॥ हवत्स॥ ॥ समवा
 हनेतुविति॥ ॥ उत्सादयामिपत्रमिति॥ ॥ त्रिविधगीति॥ हत्वाथ
 क्रियति॥ अथाग्रनगृहीष्यामीति॥ आवाप्यंरगृहीष्यामीति॥ महानत्र
 कृतानति॥ महापद्मकलमुद्धति॥ पूजाकर्मेति॥ गृहीत्यासेवति॥ अना
 स्तस्थानति॥ ध्वजयात्रायादह्नीह्राय॥ ॥ ध्वजलिङ्गागुरुमैत्रसर्विसर्ग
 नपाय. नि. म. ता. पं. वगव्यविय॥ कलभलिषक. सग्वननता. क. क. ता.
 य. सिंहनकाय. ति. कायाधिष्ठानपाया॥ ॥ अतवेस्वा. उ. म. स्वा. न.
 न. वृ. व. की. रु. य. ध. पा. लि. डा. धूं. म. ग. या. र्द. दू. डा. न. क. ना. डा. मै. उ. र. स.
 तय॥ ॥ ध्वजलि. गुरुनमिर्गपाक. मा. डा. रु. न. मि. सा. डा. म. या. क. नृ. ग.

लसवतनकृदहय॥दुदयगंधं दयात्॥ ॥धनडापथडावृत्तस्वस्तिकसुतया
 डाभावनगसुस्वन्मडापथनागया॥ ॥धनदंतकाष्ठकवियाडाहाथडापकी
 जानकी॥धनधियकंकातिनक॥धुंवडाहासहं॥तिप०नुपातयत्॥ ॥नासि
 क॥वाक्का॥ ॥गता॥मित्रापिमक॥ ॥धयासिडा॥मानक॥ ॥धयासिडा॥नक
 दृष्ट॥सापाकिदनाडास्वत्माधनाडा॥सुगथिदिय॥स्वहिदिदिविय॥ ॥
 धनग्रीथिसवडनधिय॥वाल्काविय॥दंतकाष्ठविलाडातय॥ ॥धनडा
 जमानपनिधनहीतयाडा॥दणनाकन॥श्रमककलकादीरिति॥धनं
 उलदगनिमानान॥समकपापरुशडा॥उत्तन्नति॥श्रमयूष्माहिति॥स
 र्वपनिगृहीतास्य॥ति॥पुष्पमार्गवन्नति॥गधगतकलसडानिडा॥ ॥००॥ति

वाकिला

गिष्ठाडियासनविधिः॥ ॥धयासिडादीतहयपनि॥मलुलधिलकी
 लडान्यगीतगिष्ठापानकूमलुलधिलस्वाननायक॥गड॥विस्तर्न॥ध
 नगुत्तुपधूपदान॥दवदवीस्वरूप॥न॥पूषान्यास॥हाथडापकीतथा॥ ॥
 धनगमनूदी०वाडा॥सर्प॥द्विविय॥प्रदक्षिण॥उं॥विष्णुगुणगवनमहासु
 खमाकपूत॥सर्वसिद्धिसुखप्रदीपनमसुखारुम॥सिद्धिः॥कं॥वी॥हा॥प्रो॥सिद्धि
 स्त॥प्रदक्षिण॥डा॥ना॥त्या॥अ॥मा॥य॥स्वान॥छा॥या॥ ॥धनै॥सि॥दि॥ग॥पू॥जा॥
 उ॥रु॥हान॥न॥पू॥य॥क॥ ॥धन॥श्रा॥वा॥र्य॥प्र॥थ॥म॥या॥त॥ ॥धूप॥आ॥कर्ष॥ल॥दि॥पा॥या
 दि॥सा॥या॥यं॥वा॥सु॥ ॥श्री॥का॥ल॥म॥सा॥द॥वि॥रू॥वा॥दि॥ति॥ ॥धन॥क॥स॥की॥क॥न॥
 नम॥स्का॥न॥मा॥हं॥श्र॥म॥न॥स॥वि॥द्या॥य॥ ॥००॥श्रा॥वा॥र्य॥प्र॥थ॥म॥ ॥धन॥सि॥

धनयाविधि

श्रीगुरुदेव

दिग्गुरु
वडाग्रम

नमस्तान्

ॐ

धुमाहमि साधन ॥ शुभं संतु लद गुहिका पतिना कन धूः श्रु पा यः पं पू
 ला धं स्तु ॥ तर्प्य द- कृमा पन विसर्जन श्रागन तर्प्य धर्ममिस्मि हय दव
 गा गुन माग प्रह ति क्रम थ धन दाडा गुन माग उक्ति विस्त्राय ॥ तिष्ठ
 हल ॥ नैदिप न धा धन न मस्तान न वना श्रा कृ सहिलक लिङ्गा य धन
 काडा गीत सह माडी ॥ ॥ धन इत हय पनिसु विंता क गव उ न ले विस्त्र
 इ इ कन का कन इर्वी की द पं वग य कलम संख ऊ ऊंका उल्ली ष श्री धप
 न धृति सहित न ताल साव काडा पिहाया ॥ धन धर्म नि कने गी य की मी
 उल धिलक कृपा या दू गू मं उल गा गु या य विसर्जन या य पं वग य वि
 य कलम महिष कवि य त्रिका या धि स्तान मा य ऊऊ मति ॥ ॐ ति कि

नमस्तान
 इति इति

गाहनीये ॥ धन नल विस्त्राय वक्र पप्रवज धन उिकन पक वाक
 पयक श्रमि हा ला वज कलम किस्ति सुउ वक्र खज नल कलम वीउ
 सूय दाहाली ॥ धन लडा हा य ॥ ॥ श्रम गम यति निर्मातन ॥ ॥ धन
 मूर्धया य ॥ धन गां बूला दि ति धूनं ति व की उल्ली ष ग य धन श्री धप गत य
 वग या न सव रु न धिय ॥ ॥ पुन सं उल धिलक ॥ धन दू गू मं उल या डी
 गा गु या य विसर्जन क गव तिन हा थ जा प की धन डा प धन गम न मा य ॥ इत हय
 ॥ दन रा पु न ष कि सु रु मृ ॥ ध धिं गू म हा या न मा समी प स ग य ॥ ॥
 निष्ठा वाव ॥ गुर ग म ही ॥ ॥ धन पं वां कृ स स व न प क ॥ ॥ कथ क
 न ॥ ॥ धन मी उल इ हा य ॥ पला कि क ॥ मा ग स्मं ला हा थ सा रा य न क ॥
 धन उ म नृ धी वा क ल य प्र वि म रु गी त ॥ शुभ नृ धा य ॥ इति ॥ धि

इत हय

अति

वप्रक्षमयाय ॥ पूर्वज्ञानसुतय ॥ धनदधनायाय ॥ वाक् ॥ धनपंवव
 दुयागनिर्मितनयाय ॥ वाक् ॥ द.प.उ.यावाक् ॥ वाक् ॥ वाक् ॥
 धनवसुधासुवजनधिस्येदयवाक् ॥ वाक् ॥ धनवजननृवसुधाधिस्ये
 तय ॥ वाक् ॥ ॥ धनकोषयानविस्तीतय ॥ वाक् ॥ ॥ एगिष्वाप्तवत्रपुत्रे ॥
 ॥ गानक ॥ ॥ नृपप्रहृतिविति ॥ ॥ नृतिस्मयादकदानविधि ॥ ॥
 धयासिद्धधूपदाना ॥ ध्यानं ॥ नृपगानेननमिति ॥ न्यासयाय ॥ धीनवा
 जने ॥ नृवभायाय ॥ वाक् ॥ ॥ निब्रशकाल ॥ ॥ महाकाल ॥ ॥ नृतिनृ
 वधः ॥ ॥ धनमगदुपुष्पानाङ्गकन ॥ ॥ धनपूष्यपातनयाय ॥ वाक् ॥
 गानपताकर्षण ॥ वाक् ॥ उत्सव ॥ वजननृधिस्यानयाय ॥ ॥ धनम
 उत्सवनि ॥ वाक् ॥ ॥ नृतिपूष्यारिषकः ॥ स्नाननृनक ॥ ॥ धनदध

नाखकन ॥ ॥ धनमैतलदर्शन ॥ दक्षिणतयक ॥ ॥ धयासिद्धवप्रति
 मादर्शन ॥ दक्षिणतय ॥ ॥ धनगुण्यातशासनतयक ॥ धनसुस्तिकव
 सी ॥ वंदुनालसूर्यनाल ॥ धनसुस्तिकस ॥ गिष्वाप्तय ॥ नृमंत्तलदन
 क ॥ विसर्जन ॥ नि.म.ता ॥ धनपीवारिषकविषयातयनिकातयादहय ॥
 हाजातपंतयाडा ॥ धाधिवडतगिवाक् ॥ ॥ कनक ॥ हाधजापक
 तयाडा ॥ कलणरूपकनिविचकी ॥ तयाडा ॥ दधनाखकन ॥ ॥ निनाऊ
 न ॥ दधनाख ॥ ॥ धनकहावयक ॥ हाहातसूर्याडा ॥ सिखासपिय
 गान ॥ हाय ॥ यमंगलनिति ॥ ॥ धनमूकयारिषक ॥ मूकटनपूयक
 ॥ वाक् ॥ ॥ धनवडा ॥ रिषक ॥ वाक् ॥ वाक् ॥ ॥ धीविय ॥ वाक् ॥ धीध

五言詩

आदि॥॥ॐतिदन्महिषकविधिः॥ ॥धनगुक्तालिषक॥धनधामसु
 लनाडा-राजीपकंनयाडा॥दमनावकन॥युष्मत्सादति॥उक्तालिषकविधिः॥
 धन-धनकसिखारवचकयाडा॥ऊंछांमुसिडा॥श्रुनामिकीगुलिनकयाडा॥
 खडाननिष्पयाकुपुसतय॥महामहाखवधयकं३॥ॐतिगुक्तालिषक
 विधिः॥॥सहजगीतधूल्यगमकुसिकाय॥धनहीऊनागोवकासयि
 धुमागमनि-नावाय-वित्तवान-ज्वयगमलदानवाक्॥धृतिपुहासमेय॥
 धुपासिडाहृन्दीगमकुतय॥गुन्मागमकुइडान्यगान्य॥तिपूनपुमथ
 नि-वामादहिनगीत॥धूव-वतुःसनानीनसलेपनयाय॥मिशनयाऊडा
 लाहातडा-दवीयावडा-लाहातडा॥धिधिंसावकीतय॥गुन्मध्यवल्म॥
 वि॥खगसाहाननामिजानेवायमिषयाभसः॥गिरि३रु३हा३खाहा॥॥
 गमध॥॥ॐतिपुहाहामालिषकविधिः॥ ॥धनगमकुसिकाय॥

सुभाक्षि क.

[illegible][illegible]

विद्यावृद्धात्

[illegible]

धनसङ्गाय ॥ अथ ॥ तदन्तर्हितवस्तिप्रदान ॥ मंडलप्रदक्षिण-
दिगप्रतिपूर्वादि ॥ पूजा. घं. सु ॥ दिग्दिग्माहा ॥ अथ सविष्ठा
वकीपूजा. हाग्यतर्पण ॥ तेषां वा ऊ. वस्तिप्रदान. मितानिगल
पर्यंत दीप. कुमायन. विसर्जन ॥ वक्ति. वक्तिन. पूजन. वक्ति. वक्ति
जनकाय ॥ मेघनपूजा. दक्षिण. नमस्कान. अथ सविष्ठावक.
उमरुदी. वा ऊ. न. व. दक्षिण. या. व. य ॥ ॥ ॐ तिबीनय. प. व. तदा
नविधिः ॥ ॥ धन. अथ. स. त. या. ॥ वी. व. न. पा. ॥ घ. उ. ऊ. नी. ॥ उ. उ. उ. ऊ.
वी. व. दि. द. मा. दि. ॥ व. ता. ल. ला. य. की. ह. य ॥ ॥ त. ता. त. थ. ग. त. व. र्मा. मान.
र. य ॥ वी. व. न. क. र्त्त. का. या. वा. म. म. र्त्त. ति. थ. य ॥ ह. दि. द. क्षि. त. ह. य. म. जा. या ॥

卷之四

बहुकी हिंदू चक्रि २ हाडा नया धन धन

योगिनः

शिवः

धनवीवननः दयकीतयः त्वडा नानगपूजनकीतयः ॥ उडा नानगपूजन
 मडा यावकीतयः ॥ गमधामवकनः ॥ ॐ तिष्ठा कनहविधिः ॥ ॥
 धननिष्ठावनाय नया रूप रत्नः वक्रः नलः पयः विन्धवडा ॥ गमधाम ॥ ॥
 उं मा उं दं उं गी रं पूरु की गिष्ठा ला दत्ता उत्थाम् ॥ ॥ सुप्रतिमिडित
 गी नननृपी कृत्वा ॥ मंडल छद किंभी कारयत ॥ गमधामवकनः ॥ ॥
 ॐ तिष्ठन होत विधिः ॥ ॥ धननिष्ठद किंभी कारयत ॥ धननिष्ठद किंभी कारयत ॥
 मानवववः श्रद्धां कुरु सत्त्वं धनया उत पावय ॥ नै त्वयकी त्वडा न
 लानस पूरु कतस्य उधनन कयकी कुरु तस्य पुद किंभी ॥ पूर्वज्ञानसु
 उपातननमस्कारा ॥ ॥ हन्वी धायसीतया डा दधनावकनः ॥ ॐ

सुप्रतिमिडित

योगिनः

तिष्ठा कनहविधिः ॥ ॥ सुप्रतिमिडित ॥ सुप्रतिमिडित ॥ सुप्रतिमिडित ॥
 यतिरुं लयः वजनकाः स्वां किं तनः गुरुपूजाः दकिंभी ॥ ॥ यं वधमनिहिल
 कः लिपिक ॥ गलवक्रः धूमां गमनि ॥ प्रवगुडिः आभीर्वा दः ॥ तदनीतनीय
 धनकमलः हार्यका नयत ॥ वनसाधनं ॥ मांसा रुतिः निष्ठा प्रतिष्ठा
 महावलिः साम पूरु मंडल कलमरिषकः सुगुणः आभीर्वा दः ॥ मी
 उलपू र्णः मीउल कलमरिषकः ॥ सुगुणः आभीर्वा दः मीउलपू र्णः
 कमापनः मीउल सीहानः कलमधायनः ॥ धा रुतिः मधुला दिवि
 सऊनः कलम उति समर्पणः ॥ मधुलन रु प्रवारु ॥ नागपूजा ॥ न
 उ समर्पण प्रवारु कलमपूजान ॥ प्रणापन कलम मीउलमः ॥

योगिनः

सिंहनाविधानं

स्थापयित्वा पूजयत् ॥ पञ्चमूर्तिरिष्टकः ॥ यद्गमं उच्यते तद्गुह्यं
दिपतिस्तुत ॥ तदने कुमारपूजा ॥ यथा नृजमतः गलवर्क कुर्या
त् ॥ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ॥
उन्नमः श्रीवदस्तु य ॥ सिंहनाविधानमाह ॥ मङ्गातर्धे पञ्चिमारि
मखनधपतः धनविष्णुधनः मूलमं उल्लङ्घनापंतयं दुःसिंहनमं उल्ल
कासीतय ॥ सद्यो रतिकसुगत उयकीतय ॥ कृतकैरुयातीन उयकी
तय ॥ कीर्तिकसुगतः पद्मलीकनसहः विधिध्वं धपतधूनडाडा ॥ ध
वभालि रुकेः ज्ञापयामूलमं उल्लसतय ॥ सिंधनरापयंतः शतः न
कस्तु उनीलसू उका दूहाकमातकवः कवसेदसहः विधिध्वं दवी

यत्त मूलाविधि

मे उल्लसधपतधूनडाडा ॥ कालास्यामङ्गातर्धे सूर्यार्धे पृथ्वीर्धे
शानः स्वरावपूजा ॥ गलपूजा ॥ सिद्धिसमय ॥ गीतसह उरुमं उल्ल ॥
सिद्धमू पूजा आदि समयनरुह्य समाधि ॥ गीतसह कलमपूजा ॥ कैरु
न्यास ॥ पादन्यास ॥ कालास्या गीतसह धूपयया ॥ गीतदिदयपूजा ॥
महावलिपनिवातपूजा ॥ दगुवलिगीतसह ॥ स्वांकि तत्पः गुत्पूजा
दक्रिग दगुलिसमय ॥ ॥ ध्यासिङ्गा पिहीडायाडा गिष्पपनिआना
धनयाय ॥ गुत्मं उल्लादिः भधवा मं उल्ल रुकधिरु कः नीतां जनः प
पीरुलियावकीतात्थ ॥ ॥ गुत्मा उल्ला नजीनाडा रुविय ॥ उं पु
विमगुलगवन् ॐ नमो भगवते ॥ ॥ उदक्रि ॥ तत्तद्वा नागुधातनयाय ॥

मङ्गलमव
ल्लादि

धननिनिहाय ॥ वाक् ॥ ॥ मूलमंडलसुखी देवीमंडलसंस्तानकुयः पं.
 पूसा सुति ॥ ॥ ध्याविडाग्राययप्रवक्ष्य ॥ साकांक्षसादविह
 लादिनि ॥ ॥ सिंधुमाहनिहाधन. समस्तं देवतादिगुणपूजाप्रवृत्तिन
 निवकधूनडाडा. विधिधर्ममूलपूजा. गडमहाहन. नंदिनमहा
 ननवता. ग्राहवहिसकलिहयधनडाडा ॥ ॥ ध्याविडाग्रा. उपा
 ध्यासं. गुणमाता देवदेवीविडाडा. मृगान्माहयय. विधिधर्मध
 नधनगीतसहयादिधूनडाडा. प्रवक्ष्य. दिगपतिग्राहगयायकी
 पंचमनिन. गीत. गीतहाजहना ॥ ॥ ध्यासविहारावकीतात्थ ॥
 धनैति उपाध्यापिहीडायाडा. निष्पयाहडातेनमकुप्यन ॥ ॥

ध्याविडाग्रा उपाध्यापि

उपाध्यासं. वडासुवतिविय ॥ श्रीधनिनागकुवाककाय ॥ धनै
 तिगुणमातापिहीविहारावक ॥ ॥ धनैति. हनमिनवापुनृपया
 य ॥ धनैतिहाता ॥ उंनमशीवकुसुवाय ॥ यासासंस्तानवकुति ॥
 धनैतिमूर्ध ॥ ॥ धनमकुकाकाय ॥ हनमिनवावकुतिहव
 नववानृपयाय ॥ पूजायाय ॥ ॥ धनपंचमंडलसुखीतय. मधुस
 निग. निष्प. पाउकुसुवक ॥ सुवर्णदहनतिका. वीरुधनक. पाउ
 मिनसतय. पंचमंडलसुखी. वडंगत्यासयाय. गुण. खडागत
 देवदेवीमंडलसुखी. हनमहिन्नादि ॥ धनिकुसुम. मंगु ॥
 धनवकुवधयाय ॥ ॥ वडमधिहान ॥ ॥ पंचांकु ॥ ॥ नडाविय

धनमिनवाप

धनमिन.

धनमिनसुगसुप
 धनैतिउपाध्यापि

अमरिका

महादेवक

मंडलसहित॥ तदनुक्रमनिकासं गतप्रविष्टमहानतुष्टुशतिय०
तुष्टुदक्षिणिकुगांजसिमाशसंज्ञासावगीतसहस्रसनातुष्टुशतिय०
वक्त्रीकै०॥ मुख्यं तस्य पूर्वज्ञानं पंचपुष्पमंकावधत॥ ॥ नि
यतितवाकं०॥ ॥ धर्मेतिधूमदान॥ श्रावणविधि॥ धनस्यानेकाया
वाक्य॥ सिंहनमै० लसंज्ञानकाया॥ जीकानन० पुष्ट॥ ॥ कृतिमात्र
रिषकविधिः॥ ॥ धनवक्रुत्थातन॥ ॥ धनमै० लयातलकन॥
॥ यामित्वाखसमाहितीति॥ ॥ धर्मेतिस्वस्तिकसंस्तव॥ गुप्तमै० लय
नक० वाक्यालपयतीति॥ विस्तृतेती० म० गा० ठिकायोविज्ञान॥ ॥ धर्मेति
हथआपकीकया०॥ धाधिवक्तृति॥ ॥ धनकीर्तिकल्प० कृव

मंडलान

कृतिविषयक० मीगत्वमथत॥ ॥ धनगुप्तप्रवृत्तिन० सामकिकाय
खिकल्प॥ ॥ धनकृत्कनसंज्ञानकायक॥ महादानवाक्य० यादि
वगुनत्त॥ ॥ धनउद्याताकल्प॥ ॥ धनमै० लयदान॥ ज्ञापकाया॥ ॥
ज्ञापयावक॥ ज्ञापस्यानकृवक॥ ॥ धातनकृयक॥ ॥ सिंहमाहति
गीतउदितात॥ ॥ गुप्तमागोर्हिहासनसविक्रावक॥ ॥ धनवाक्य
कृत्कमधिकाय० गुप्तमागसक० गुप्तमागसहस्रजनमावक॥ ॥ उ
पाध्याप्रवृत्तिन० कल्पसमयवक्रविधिधैकालयिगीत॥ धर्मीग
निकृषा॥ ॥ धनगुप्तमागमूजायाय॥ गीतवाक्यवक्रि० दक्षिण
सकलधर्मनिपतिहते० गुप्तमागवाक्य० आदिनगागयावक॥
धनवक्त्रीकै० लगीतन० मंडाकाकाय॥ ॥ धनधर्मनिसंज्ञानवि

मंत्रविषय

उदिताकल्प

कावयि

वक्रि

वक्रि

नामः

य॥ यधर्मगि॥ स्वां कित्त॥ गुत्र पूजा पंवां कृ॥ गल वक्रधू
मी गमनि॥ ॥ ॐ मिमि भूना रिष क विधि समा फा॥ ॥ गुह॥ ॥
धननामद॥ श्रुता एह्यनामाति॥ हासवड॥ विलाषव॥ नतिव॥ लोला
वड॥ तसि० सुय० दुष० हवड॥ वन० लव॥ विरुव॥ कंकाव॥ श्रुता ए
वड॥ ॥ वैनावनस्यनामाति॥ उंकावड॥ मसुत० तथगत० माह० म
या० वड० नृप० काय० वैनावनवडुति॥ ॥ नत्तसंहवस्यनामाति
विंतामसि वड॥ खग० गगल० तंऊ० मार्तण्ड० लाकि० मान० नत्त
० ॥ श्रुति गह० ॥ श्रवसावड॥ धर्म० पद्म० वडांकुन० पद्मकुल०
सुनताकुल० श्रुति० पद्ममातंद० सुनतामंद० कर्णकुल०

धूम्रगन्धि

[illegible]

गम। नाग वडा। वडागीता॥ वडा महासूची॥ वडा वताली॥ वडा मणि॥ वडा
 हासा॥ वडा ताता॥ वाग नता॥ ॥ भूमा घटि इत्यमु॥ वडा गहा॥ व
 डा माया॥ वडा वडा दवा॥ वडा नृपुण्यत्री॥ समय वडा॥ वडा नति॥ ॥ वृत्ति
 अगत कलसीहा समाका॥ ॥ गुरु॥ ॥ अक्षर कलसीहा तय न न न याल य रं हः भूः ॥
 ॥ ॥ ॥ भावमा॥ ॥ कं हः भूः ॥ ॥ नृनि नि वि स र्ग यत् ॥ ॥
 वक्ष वं च को काय॥ वाक्॥ अज्ञानति मि रां ध स्य ता नां जन शला कया॥ वक्ष रुत्मी लि
 नये न त लै श्री गुरवे नमः॥ १ ॥

पुनिनाष्टिया.



श्रीगणेश

श्रीगणेश

श्रीगणेश

दशयाह्नयानयाग

मूर्धन्यकलाचंड-श्रीकलश-सिंधुमूला
पूर्व पीतवज्रा

श्रीगणेश

श्रीगणेश

कुंज

दशसमस्तिकीद

यमदंड
दक्षिण

श्रीगणेश

श्रीगणेश

श्रीगणेश

श्रीगणेश

श्रीगणेश

नमः शिवाय ॥ ॥ अथ शिवाय पूर्वसंवा विधिमाह ॥ ॥ अथ म
पूर्वसंवादिनः शुभ-माशपाध्यायधर्मस्थविनामं क्रोनकर्मदिंकला
वागमत्यागीथिज्ञानानंतरं तीर्थकुलमानयित्वा ॥ गृहभुवहूम्यामंडल
वागममयसुक्तिकाजलेन लेपयित्वा संमार्जनं सति ॥ कलश-कलंक-सिद्ध
मूर्तये-गणेशाय-पंचसूत्रपंचामृतसाइह-काष्ठा-लकवा-किसती-वि
क्रुष्ट-सो-कलंक-गण-मालकाविभक्तध्यापनधनकाश-पूजाहोम
संकल्प ॥ सहायपूजा ॥ शुभमंडलशिरसाधि ॥ मूलकलशपूजा ॥ वज्र
पूजा-दशवलि-शुभमंडलविसर्जनस्वीकृतन-शुभपूजादक्षिण-कमा
पनसंगताय-कलश-विषक-सिद्धतनयि-क-कलंक-सिद्धमूलशहा

या ॥ ॥ धर्मीति पी० सज्जनमाता ॥ सिद्धं च पूजादिं संगं धर्मापि मतं सुक्रिया
 संसारकाजालं यना ॥ ॥ धर्मापि मतं ॥ धर्ममूधकातिन पूजादीक ल्प ॥ १६४
 रामतयक ॥ स्वरावपूजा ॥ गुरुमंडलं सरस्वतिसमाधि मूलपूजा ॥ वक्र
 पूजा ॥ दगुवलि गुरुमंडलं किं तन गुरुपूजा दक्षिण ॥ संगं सिंह नकाका
 य तन तिय तिक ॥ ववापा रुका सन पी० स भावया या गुरु मया य ॥ ॥
 ॥ धनं कुसिहां गायत्री नामं उल्लस क विन वस वधिला सुल्लखित य
 ॥ स्या पन क्रम मंडल पाका स संगं धर्मापि मतं स्वा रु मास का धर्मापन धन
 काजी पूजा संक ल्प धन मूध कातिन ॥ ॥ स्वरावपूजा ॥ गुरुमंडलं समाधि ॥
 मूलपूजा ॥ वाक पूजा ॥ दगुवलि गुरुमंडलं किं तन गुरुपूजा दक्षिण
 संगं सिद्ध काका य तन तिक तिया ॥ धन गुरुमाता उपा धर्मा ववापा कु

मध्वं धान ॥ मूलाचार्यन किं जपया दं नमस्कान का य त लक्ष्म्या ॥ ध
 ननमस्कान का य धर्मा दया ववा धर्मा संकु रं रं रु या नाग का य लल
 वा रु का य च की कं उल्ला रं रं रु या नाग नंतु का किय स्वादि द्वाय म्ना ॥
 दिगुत्तमय ॥ समय वक्र हा रु नर्धका नीव पका ॥ धर्मा पूथन ॥ गीत ल्प मा
 दित मूलाचार्य मंडल पाका स नृ ल्प गीत ॥ ॥ नृ ल्प मूलाचार्य का य
 ॥ ॥ ॥ ति पूर्व स वा विधिः संपूर्णम् ॥ शुभम् ॥
 नैवेद्य द्या य ॥ श्लोक ॥ अन्नं वतु विधं स्वादुरसेऽष्टिः समन्वि
 तं ॥ भक्ष्य भोज्य समा युक्तं नैवेद्यं प्रति गृह्यतां ॥ १ ॥